अध्याय - 11

अपठित अनुच्छेद

जिस पाठ को पहले कभी न पढ़ा हो या न देखा हो, उसे अपठित पाठ या अनुच्छेद कहते हैं । अपठित अंश को पढ़ने से उसके मुख्य मुद्दों को आसानी से समझा जा सकता है । उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए जा सकते हैं । नीचे ऐसे अपठित अनुच्छेद दिए जा रहे हैं । आपको उसमें से उत्तर लिखना पड़ेगा । इससे आपकी बोध-शक्ति और भाषाई क्षमता की जाँच हो जाएगी ।

अपठित अनुच्छेद के उत्तर देने से पहले :

आपका काम :

(i) मूल अवतरण को दो-तीन बार पढ़ लेना चाहिए ।

(ii) मुख्य विचार-बिन्दुओं को रंखांकित कर देना चाहिए ।

(iii) प्रश्नों के अनुसार उत्तर ढूँढ़ लेना चाहिए ।

(iv) कहीं-कहीं शब्द-जाल में फँसे उत्तर को पहचान लेना चाहिए ।

(v) उत्तर सरल, संक्षिप्त और अपनी मौलिक भाषा में देने चाहिए ।

(vi) अनावश्यक शब्द-प्रयोग से बचना चाहिए ।

(vii) अवतरण में आए शब्दों को छोड़ अपने शब्दों में ही लिखना चाहिए ।

(viii) प्रश्न के काल के अनुसार उत्तर होने चाहिए ।

उदाहरण

कुछ लोग सामान्यत: विज्ञान का समर्थन करने के साथ-साथ धर्म की उपेक्षा करते हैं । वे वैज्ञानिक सत्य का गुणगान करते हैं । धर्म को अंधविश्वास कहकर उसकी हँसी उड़ाते हैं, पर वास्तव में दोनों का क्षेत्र अलग-अलग होते हुए भी दोनों एक दूसरे से संबंधित हैं । धर्म मानव के हृदय का विस्तार करता है; मानवीय गुणों और आदर्शों के प्रति उसे आकर्षित करता है; उसे कर्त्तव्य के प्रति सजग कर देता है । विज्ञान मानव की बुद्धि का विस्तार करता

है; सत्य का अन्वेषण करता है; प्रकृति के रहस्य का उन्मोचन करता है । धर्म शांति देता है । विज्ञान सुख देता है । दोनों मानव का कल्याण करते हैं ।

प्रश्न :

(i) लोग सामान्यत: क्या करते हैं ?

(ii) लोग किसकी हँसी उड़ाते हैं ?

(iii) धर्म क्या-क्या करता है ?

(iv) विज्ञान क्या-क्या करता है ?

(v) मानव का कल्याण कौन करते हैं ?

उतर :

(i) लोग सामान्यत: विज्ञान का समर्थन करने के साथ-साथ धर्म की अपेक्षा करते हैं ।

(ii) लोग धर्म को अंधविश्वास कहकर उसकी हँसी उड़ाते हैं ।

(iii) धर्म मानव के हृदय का विस्तार करता है; मानवीय गुणों और आदर्शों के प्रति उसे आकर्षित करता है; उसे कर्तव्य के प्रति सजग कर देता है ।

(iv) विज्ञान मानव की बुद्धि का विस्तार करता है; सत्य का अन्वेषण करता है, प्रकृति का रहस्य खोल देता है ।

(v) धर्म और विज्ञान दोनों मानव का कल्याण करते हैं ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) कुछ लोग मानते हैं ाक सदाचार का पालन करने से कोई लाभ नहीं है । भ्रष्टाचार करने से कोई नुकसान नहीं है । उनके मन का तर्क है कि भ्रष्टाचारी को कोई दंड नहीं मिलता, अपने किए पर शर्म नहीं आती । वे पाप से नहीं डरते ऐसे लोगों का मन नास्तिक है, सदाचार मानव जाति का गुण है, भ्रष्टाचार दोष है । गुण से प्रेम और दोष से भय होना चाहिए । दोष से आज भय नहीं हुआ तो कल अवश्य होगा ।

उस दिन विवेक दु:खी होगा । अपनी गलती के लिए पछताएगा । उसकी चिंता बढ़ेगी । चिंता से रोग उत्पन्न होगा । रोग से अकाल-मृत्यु होगी । अब यह प्रश्न है कि आज विवेक की सलाह मानें या मन को खुला छोड़ दें ।

प्रश्न :

(i) कुछ लोग भ्रष्टाचारी के पक्ष में क्या तर्क देते हैं ?

(ii) मानव-जाति के गुण-दोष कौन-कौन हैं ?

(iii) कब दोष से भय होगा ?

(iv) चिंता बढ़ जाने का परिणाम क्या होगा ?

(v) आज हमारे सामने क्या प्रश्न है ?

(ख) हम सामाजिक प्राणी हैं । हम अपना जीवन अकेला बिता नहीं सकेंगे । हम घर से निकलते ही विभिन्न लोगों से विभिन्न मौके पर मिलते हैं। हम जिनसे अधिक मिलते-जुलते हैं, उन्हें अपना मित्र बना लेते हैं । बड़ी सावधानी से मित्रता करनी चाहिए, क्योंकि हम पर उनकी संगति का प्रभाव पड़ता है । इसलिए किसी को मित्र बनाते समय उसकी आदतों और पूर्व आचरण पर विचार करना चाहिए । किसी का हँसमुख चेहरा, चापलूसी बात, कार्यों में चतुराई देखकर मोहित होकर उससे मित्रता करने से बाद में पछताना पड़ता है । मित्र का विचार, संस्कार, आचार, व्यवहार और रुचि हमारी तरह होनी चाहिए । सच्चा मित्र निर्लोभ, विश्वास-पात्र, प्रेरणादायक तथा सहायक होता है; वह जीवन-संघर्ष में साहस दिलाता है । सफलता पाने से खुश होता है ।

प्रश्न :

(i) हम किन्हें अपना मित्र बना लेते हैं ?

(ii) हमें क्यों सावधानी से मित्रता करनी चाहिए ?

(iii) किसी को मित्र बनाते समय किस पर विचार करना चाहिए ?

(iv) हमें कब पछताना पड़ता है ?

(v) सच्चा मित्र कैसा होता है ?

●